

गुरुमाई चिद्विलासानन्द द्वारा लिखित पुस्तक

अन्तर-शुद्धि के सोपान

उद्धरण २५

सच तो यह है कि भय लाभदायक हो सकता है, यदि इसका सदुपयोग किया जाए और यदि न किया जाए तो पूरी तरह हानिकारक। जैसा कि एक फ़्राँसीसी लेखक ने कहा है, “एक होता है सात्त्विक भय जो श्रद्धा का परिणाम है और एक होता है द्वेषपूर्ण भय जिसका जन्म सन्देह और अविश्वास से होता है। पहला भय आशा की ओर ले जाता है और भगवान पर निर्भर रहता है जिनमें उसे आस्था है; दूसरे का झुकाव हताशा की ओर होता है और यह भगवान पर निर्भर नहीं रहता जिनमें उसे आस्था ही नहीं है। पहले प्रकार की धारणा के लोगों को भगवान को खोने का भय है; दूसरे प्रकार के लोगों को भगवान को पाने का भय है।”



© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

गुरुमाई चिद्विलासानन्द, अन्तर-शुद्धि के सोपान : दिव्य सद्गुणों का योग अध्याय १ “अभय,” से उद्धृत [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, २०१३], पृ. १२।